

परमेश्वरी स्तोत्र

महाकेतुकुलीशिका॥ पताकिनीदयारंभा मूलप्रकृतिरीश्वरी॥ मार्तण्ड
मण्डलवरी, सिन्दूरतिलकप्रिया॥ त्रधासहस्रमूर्तिश्च, त्रण्डमूर्तिमहेश्व
री॥ महाहंसवतीविष्णु, मतीविमलसिंहिका॥ महाखण्डमतीसिंह, मतिर्व
रमतिप्रभा॥ अधीरमतीमोतंगी, द्यौतक्षरमहामती॥ विचित्रचित्रितमती
वीरसिंहमतीपरा॥ नैरवसिंहमतिज्ञाना, महालक्ष्मीमतीकृशा॥ महाकु
ह्यनसंस्थानी, महाइडामरीविका॥ सर्वगाम्बादिद्यगाम्बा, महामीनाम

॥६॥

हसुरी॥ महावण्डिनिदिवांगी महाविद्याप्रभूविजामहांतरिक्षतेजाम्बासिद्धि
गिनिनामिनी॥ गगणाम्बानहानदी महानीलचतुःकृशा महावण्डमण्डला
सौनकीरूपणीघनी॥ पंडुकीनीचपंडुकी गन्धकाली मंतगिनी किंवर्तिनी चंपक
व. मर्तकामिनिशक्षरी॥ जनकानक्षोकी श्रीत्री धूम्रादंष्ट्रिणिरूपिणी ज्वालिनी
गगणेशीच मायागान्धारिणीनदी॥ विद्याशांता महामाया सुभगानन्दिनी ध्रु
वा उमानन्दप्रियानन्दा महानन्दा सुनन्दिनी॥ इडामरी विविद्यावा मीनजा
म्बाप्रबोधिनी॥ वण्डिनी रौद्रिणी दिवा सिधंत रिक्षगाम्भता॥ अम्बिकाकाः

॥६॥

लिकाम्बावसाक्षावात्रजनायिका विद्याधरी वण्डिनी च मासता सर्वदा स्मृता
॥ उक्ता मुखी लोकमुखी वर्णेशीवर्णमालिका नीमानना अनंगास्था विद्याक
लप्रवर्तिनी॥ दुन्मनी सुन्दरी स्वाहा सुधामंडलवारिणी कयाला विकयाला
चखगंम्बाखगवाहिनी॥ मृगालीपूतनावज्रयो मकाली च कौलिनी॥ योनि
श्च सिद्धियोनिश्च महायोनि सुयोनिजा॥ सिद्धिनी शंखयोनी महासंग्र
स्थियोनिजा॥ दिव्ययोनि महादिव्य योनि पद्माक्षयोनि च॥ महानक्षोण न

भीव. महासंहारिणी शिवा महारक्ते श्वरी रौद्री. महाकृतांतनासिनी ॥ महा
 यमभक्षणीव. कालसंहारघोषिणी. कालरात्रिर्महारौद्री वाण्डाली का
 लनासिनी ॥ वीरे श्वरी वीरपूज्या. कालाग्निनयदारिणी. महानैरवसंहारी.
 वृद्धाण्डांतर्विहारिणी ॥ संहारकालिका नद्रा. महानयविद्यातिनी. मृष्टिका
 ली महादिद्या. स्थितिकाली महोज्वला ॥ संहारकालिकोडुम. कालग्रसनका
 लिका. रक्तकाली महास्त्रीव. काली यमसमाग्जिका ॥ मृत्युकाली नद्रका

ली. महामार्तण्डकालिका. महाकालाग्नि कालीव. परमाकर्षक कालिका ॥
 कालकाली महाघोरा. वाण्डनैरवकालिका. मंत्रकाली हंसकाली क्रमकाली
 वडामरी ॥ ज्ञानकालीवक्रकाली. वक्रॐकारकालिका. महागगणकालीव.
 एकनासावकालिका ॥ महाशयकालिव. महावलांतकालिका. मृष्टिकाली
 शुद्धिकाली. नासा श्रीहंसकालिका ॥ नासा म्वरकालिकाव. नासा म्वक्षु
 कालिका. सूर्यकाली. वन्दुकाली. अग्निकाली सुनीषणा ॥ वायुकाली योम
 काली मनः काली सुधा पिणी. सर्वकाली सिद्धिकाली. निरालम्बा सुकालि

का॥ कालिकारंजिनीमुद्रा मुद्रा सालेलिहानका कापालमुद्रा कालघ्नी मु
 द्रा सा कालनासिनी ॥ समयघ्नी घोरमुद्रा विकरालोचनामरी ॥ श्रीकुण्डः
 लाज्ञानमुद्रा शिलाकापालमुद्रिका ॥ योनिमुद्रा परा मुद्रा महा मुद्रा व द
 दशी ॥ विष्णिनी धीवरी काली पुरि एडी ओडिका प्रभा वेश्या म्बा शौण्डिनी
 घोर कैवती खटकी मली ॥ रजकी विष्णिनी सोना अंतकी कोश धम्बिका
 अग्निवक्राचपिंगा क्षीरमनीचमणिज्जला ॥ गोकर्णी गजकर्णी वामा मुद्रा
 भस्वकर्णिका ॥ विद्युन्मुखी प्रसमम्बा लोकमाता प्रभाविनी ॥ जलानना

उग्रवला कपिलायतना जया ॥ जगनाशा जगत्कर्णी संच्छा राजमातृका ॥
 गुह्यश्वरी शारदाचञ्जलेश्वरी च पार्वती ॥ कुमारी हरणी माया महा माया वम
 भिका ॥ रक्तवाच महा काली व्याण काली विनी नृगा ॥ उद्भू केशी विन्नमस्ता म
 हलक्ष्मी त्रिकोणगा ॥ मातंगी शिवदूती च सिद्धामा यन्नमदिरा ॥ यन्नमो नि
 निरावाधा सुलिंगा जगमालीनी ॥ चण्डाख्या विजया ग्राना त्रिशक्ती मातृका
 तरा ॥ कपालिनी मालिनी च कामिनी कोमलालसा ॥ मंत्रेश्वरी उग्र काली लक्ष्मी
 मालातृकालिकी ॥ कुमारी रक्तचण्डाख्या कामालक्ष्मी मनोहरा ॥ जिनमाता

॥२॥

जिनेद्राव सारदाहं सब हिनी महोग्रीवो च सुरमा सुभक्ता च मनोरमा ॥ अथ
रामा परा म्वाच नगरी लाग्रवासिनी ॥ शुक्ल कंठर नूषांगी ॥ शुक्ल कंठर धा
रिणी ॥ दंष्ट्रिनी विकटास्था च शिवदूती धनस्तनी ॥ शय्यमाला विभूषांगी ॥ स
र्पकुण्डलधारिणी ॥ सद्यश्चिन्नशिरोमाला आपदाता वलम्बिनी ॥ वदुवक्रा
वदुमुजा वदुपादा गणेश्वरी ॥ त्रिकोणविन्दुनिलया पंचचक्रनिवासिनी ॥
सुलमाग्नस्थिता शुद्धा शुद्धमाग्रा वदुद्विबोधिनी ॥ मूलाधारनिराधारे
वदुद्विबोदुक्ततालया स्वासौ धू सगति जिबो ग्राहिनी वदुसंश्रया ॥ व

॥२॥

ल्लतंतु समुत्पानां षडरसात्वादुलोलया ॥ कालवक्राभ्रमिन्त्राता मिः भुम
भ्रमनाशिनी ॥ वात्याली मेघमाला च सुवृष्टिः सस्यवद्विनी ॥ अकाराचउ
कारावओकारैकाररूपिणी ॥ क्रीकारबीजरूपा च क्लीकाराम्बरवा सि
नी ॥ सिन्दूरारुणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया ॥ श्यामा च वस्यबीजा च लो
कवस्य विना विनी ॥ गजाननाहयमुखो रासनाया मुकानना ॥ विद्विका
ज्ञेनवारिण्य परमेव विजारिणी ॥ सहस्रास्था सहस्राक्ष्या सहस्रभुज
धारिणी ॥ सहस्रपादधारिण्य प्रेतमाग्नप्रबोधिनी ॥ कौटिलवक्राको

टिपादा नुजाकोटि धृत सदा ॥ महामारी विनिद्रा च तन्मृत्युर्विना सिनी ॥ च
 द्रमाण्डल संकासां चन्द्रमण्डवा सिनी ॥ अनिमादिगुणोपेता अस्महा काम
 रूपिणी ॥ अष्ट सिद्धिप्रदा देवी दुष्टदानवघातिनी ॥ अनादिनिधना पुष्टि च
 तुर्वर्गफलप्रदा ॥ गिरिकणी प्रतीकाशा शरत्कुमुदलोचना ॥ भूतभयभ
 विष्मता भूतनावननाविनी ॥ काममार्ग रता वीमा शिववामा गवासि
 नी ॥ मंगलावसुशीला च पुतमार्ग प्रवोधिनी ॥ कुजिका च कुशा कुत्रामा

तामालिनिमानदा ॥ ज्वालामुखी वेगवती उमापुष्पकामहेश्वरी ॥ शुचाकामा
 च प्रकृती योषणी रावराविनी ॥ क्रममण्डलमयोऽस्याक्रमेशी च नवात्मिका
 ॥ बाली रौद्री गुरुवती वैष्णवी चोररूपिणी ॥ नारसिंही शक्रवती चामु
 ण्डा च द्विका भगा ॥ नद्या गीर्वाणि गस्या च महामा ग्या महाबला ॥ योगिनी
 राजिनी रस्या रत्नकंचुका रिणी ॥ गजवर्मवृता गी च व्याघ्रवर्मकटी
 स्थिता ॥ सिंहवर्म नितंबी च कालवर्मा त्रिरीयका ॥ विश्वलक्ष्मी विश्व
 माता जातरूपस्वरूपिणी ॥ सर्वविद्यामयी मंत्र सर्वमंत्राक्षरांपरा ।

मातृमंडलमध्यास्था मातृमंडलवासिनी॥ कुमारजननी शुद्धा सुमुखी पाप
 नाशिनी॥ महा लक्ष्मी वसुनगा शीतला शीलसंयुता॥ दिव्यास्त्री नंदकाली
 वषातालस्फोटकालिका॥ नृत्यध्वजा वातध्वजा धमध्वे जानुवालिनी॥
 अपराजिता अजीता वरावणी रामनासिका॥ शुष्का शुष्का शुष्कमुखी
 विकरालिकरालिनी॥ राममाता रामपूज्या राज्यदारा राज्यपूजिता
 ॥ शिवामहंतारिका वविशाषामहुरिप्रिया॥ मनोनुगा कोलिनी व
 विश्वेयांतरीणि॥ रक्ता रक्ते प्रिया प्योरा करालिके कनाथना॥ क

श्री

एमोटी वयोगेशी विनम्रानम्रवासिनी॥ कलंका मालिनी कांतानारा
 यणिजगद्धिता॥ अष्टादहासिनी हासा वज्रपुष्पालिमालिनी॥ यंत्रप्रम
 थनी तंत्रमाता मंत्रप्रकाशिनी॥ सरसदेवी ललजिह्वा भामांता शिवरीग
 वी॥ मरी विकालिकालय्या कालवर्मविभूषणी॥ भामांता कालिका
 धमा काली विश्वविमर्दिनी॥ संग्रामकालिका कालवंदनी राववादि
 नी॥ ज्वालाननी कराली च धूमकाली रणप्रिया॥ अमरांतरकाली च धूम
 मकाली रणप्रिया॥ अमरांतरकाली च चण्डी भुवनमालिनी॥ कुलि

॥१२॥

कांतरकालीचमाहेशीकृशापिंगला॥ पापारिचयापदरापातालस्ये
दिनीशिवा॥ रावराविनिरोद्रास्यागर्भसंभनकालिका॥ अक्षक्ता
वण्डयोगेश्वरीप्रत्यंगिरास्मृता॥ भुजानीचस्वधास्वाहाधुमागंगा
होद्धता॥ आदेशकालिकाक्षोभकालिमेलापकालिका॥ अक्षक्ता
लीलाकर्षाशांतिनीनेत्रकालिका॥ परमार्कमहाकालीनेत्रकाली
सुराश्रिता॥ नक्तवश्यानक्तसेयाक्रमलालयप्रशिनी॥ पंचप्राण

॥१२॥

श्वरीप्राणरक्षणीरक्तचण्डिका॥ शाकंभरीविडालारव्यानन्दानद्राः
जितानद्या॥ मनोभनीमहाद्रुष्टाकरवीरनिवासिनी॥ करनीरश्म
शानस्था॥ लक्ष्मीवनगुहाचरी॥ गुहाश्विनीगिनीगिरिसुवाराणना
थजयंकरी॥ वण्डसुरनिहन्त्रीचत्रेणसुवत्रधारिणी॥ ब्रह्मकेका
रसंलज्जविष्णुलंकारभूषिता॥ महामंत्रकालिकावमहाभीषण
कालिका॥ कुण्डपुष्पप्रियाश्यामागालकुकुण्डमप्रिया॥ स्वयंभुक्
सुमानन्दादूतीषट्समाश्रणी॥ वर्यावरौण्डिनीब्राह्मीखटकीदि

॥१३॥

पिनीकुली॥ रजकीवारिणी पाला सा मिषा मा भन पदा कैवर्ती नटकी
कोरी वलिनी क्षत्रिन त्रिनी॥ वक्रिणी पुष्पणी सुदी॥ वरी वर्म कारिणी
। मातंगी नटकी वेश्या वायकी सौनकी पर॥ बाण्डाली वृजिनी वेश्या महा
मत्यंत जावकी॥ महाक्रमन काली व. काल काली व. कोली का॥ महागमान का
ली व. एका ना साव कालिका॥ मनती कालिका रूप काली कनक कालिका
॥ राध काली महा काली कालिका व. ल कालिका॥ खण्कोटे श्वरी काली
राजराजेश्वरी सथ॥ महाडामर काली व. नासा काली व. योगिनी॥ दुहे

॥१३॥

लि३

श्वरी महा काली महाशूलाग्र कालिका॥ योगिनी कालिका देवी वन दुर्गा वन
प्रिया॥ मातंगी महिला देवी नर मां सरता सदा॥ शवरी शावरी शैला शरणा
गत तपरा॥ वक्षला वारुणी काली माहेशी मन्त्र गामिनी॥ दुर्ध्व केशी व. कामा
ख्या व. कुकेशी निमर्दिनी॥ ओष काली व. पे. काली श्री सिंदी कालिका रूप
॥ यर्म काली ज्ञान काली राविनी कालिका परा॥ लीलावती कालिका व. श्रीम
ती कोका ततः॥ वुलिका कालिका प्राण कुंकार राव कालिका॥ महा फेरव
काली व. महा करालिका लिका॥ मादिनी कालिका माया स्वामिनी ना

॥५॥

वह

का
मकाली हासिनी कालिका काली काली भुवनमोहिनी ॥ मृष्टिका ली स्थिति
काली संसार कालिका कला ॥ हंस काली यम काली कालाग्रसन कालिका ॥
विष्णोत कालिनी काली वृषभ षष्ठ कालिका ॥ कुक्कुट षष्ठ काली ॥ गरुड
ज कालिका ॥ मयूर वाहना काली ॥ हंस षष्ठ निवासिनी ॥ कालरात्री महाका
ली ॥ वणेश्वरी स्तथा ॥ कुला काली कुलेशीव महा नन्दन चारिणी ॥ विश्वावा
सिन्धु पाणेशी ॥ विराली परपूजिता ॥ वीरेश्वरी कालिका व महाभूतान्तिका
लिका ॥ रक्तरेके श्वरी काली कालाक्षिका लिका परा ॥ पैत्तारिणी जोषु

॥५॥

कीव रामाशीश्वरवल्लभा ॥ अपर्णा त्रिपुरातारा उग्रतारा कलंकिनी ॥ वात्रारि
काववाराही ॥ वराहवेडवानद्या ॥ अंघ्रिनी हंघ्रिनी काली स्तंभिनी मोहिनी क
ला ॥ जंभिनी जयदाजैत्री जगद्धाजगत्पुसु ॥ अकिनी राकिनी काली लाकि
नी साकिनी गणा ॥ काकिनी हाकिनी शीला ॥ याकिनी धातुवाहिनी ॥ अनिमात
पिमा शांति ॥ महिमा महाश्रिता ॥ ३ सित काली वारिहा शावरी सारगा
मिनी ॥ कंकार तोरणवती ॥ महापितृवनेश्वरी ॥ श्मशानवासिनी रोद्री ॥ य
राघोरतनुः श्रिता ॥ सृष्टिस्थित संसार कारिणी विश्वधारिणी ॥ त्रिमा

गी गति संचारी उल्लस्य निवासिनी ॥ मद्रु कनेदिनी गुह्या नक्तमान सवासिनी
 ॥ जनी जनी त्रिजननी जयमातृ गणेश्वरी ॥ वल्लविद्या वल्लभवेद्या वल्लभा एडकोटि
 व्यापिनी ॥ वामाचाररता गामा नानादक्षिण कालिका ॥ कुंकारिणी रासुव
 शीरुंकार विवुषेश्वरी ॥ मुकुं केशी विरूपाक्षी जगदानन्दनायिनी ॥ कुं के
 श्वरी वरुंकार त्वक्मा गजनुसारिणी ॥ सहस्रकोटि सूर्यानां तेजसां
 जराशिनी ॥ सहस्रकोटि सोमानां ममृतं श्रावणी प्रदा ॥ गुह्याद्याया
 गिनी पूज्या सदा मृतामृत प्रदा ॥ सप्त विं सति मुण्डस्था त्रिमुरवा

नवलोचना ॥ सरस्वती वगायत्री सावित्री मंगलेश्वरी ॥ वाग्वादिनी क्लेश
 हरी कर्मवर्जविनेविनी ॥ वीणेश्वरी वर्णमयी वर्णमाला विराजिता
 ॥ त्रिलोकजननी गोप्त्री नान्या गगनगामिनी ॥ पंचभूतप्रिया नित्या
 पंचपिण्डप्रः प्रपूजिता शारदरूपिनि आंकाशे प्रकाशे तेजरूपिनी ॥ गव्य
 रूपिणी तृत्वांतु पवनस्य सरूपिनी ॥ रसरूपिनि तेजस्य परं वभूतरूपिनी ॥ सुरस्य
 रूपिणी पुष्पे दुग्धे साय्यी स्वरूपिणी ॥ परब्रह्मात्मिका काली जयद्रथवर प्रदा ॥

॥१६॥

एउ

दवी
उर्वसि सिद्धिदात्री च राक्षसी क्षोभिनी तथा जयवागेश्वरी श्रीं विद्यास्वसि पुरश्चि
ता ॥ त्रिपुराशैरवी जाना कालिकालयशैरवी वैतन्यशैरवी चंडशैरवी सिंहिका ॥
संपत्त्युदाशैरवी च सागुनिशैरवी माग्निनी ॥ जयश्रीशैरवी काली मनोनादनशै
रवी ॥ हरसिद्धिप्रसवाती हारणी दानवांतकी ॥ पूर्णेश्वरी पूर्णमना पूर्वेदेवप्र
पूजिता ॥ पूर्णपात्ररतानित्या सदावारविचारिणी ॥ पूर्णवांछितदात्री च सद्यस
दान्यतागुणी ॥ कालिकालयकाली च सर्वज्ञानप्रदानया योगेश्वरी महाच
महोदाममहोगुणी ॥ शुद्धिस्थिती च संसारअनाख्या नासकालिका ॥ गु

॥१६॥

ह्यकाली विश्वमाता निर्वोणेशी परेश्वरी ॥ नामादिष्टानां ॥ १००० ॥ श्लोक सं
ख्या १०६ ॥ ॥ इति श्री परमेशान्यां स्तोत्रनामसहस्रकं स्मृतं मंत्रो
पनिषदं महापातकनाशनं ॥ महामंत्रोपनिषदं विश्वेशी विश्वरूपि
णी ॥ दोषानानां चरायोद्या मेरुमण्डलसंनिभा ॥ प्रदश्यंते तमाक्षिपु
मिन्धनानि यथाग्निना ॥ स्नानेन कोटि तीर्थानां मंत्रकोटिजपादिभि
॥ घनूनां कोटिदानेन विप्रानां कोटिभोजनैः ॥ कोटिधा कोटिहोमेन
तपसा जन्मकोटिषु ॥ महीकांचनसंपूर्णा सप्तद्वीपादि सागरां दत्ता

॥७॥

वरावरं सर्वान् यत्फलं लभते भूवे ॥ तत्फलं लभते सांगंस्तवानां कीर्तिना भू-
वं । अमुं न्याम्बानव न्याम्बाः नृतायाम्बारवेदिने ॥ कुजे वाथ शनै वाथ पठि-
तं यंगुरोपि वा । एकाग्रं चिंतयेद्देवीं प्रयाति पतिमादते ॥ पुष्पप्रकरसं-
कीर्णं वलिदानपुरस्करं । अर्चयेत्पूजयेद्देवीं शुक्लां सेननचिंतयेत् ॥
जन्मकोटिसहस्रेण यथाप्यसमुपाजितं । अनेन वृत्तमात्रेण वांछिता-
र्थलभेत्प्रभवं ॥ आयुरारोग्यमाप्नोति धर्मकोमलसंतती ॥ इति क-
मानवाप्नोति त्रिरावर्त्य ससयः ॥ चतुस्र्ययः ॥ १३ ॥

॥७॥